मैत्री, एकता, बन्धुत्व
दिशा
ДРУЖБА. ЕДИНСТВО. БРАТСТВО.
ГОРИЗОНТ
भारत-रूस राजनयिक सम्बन्ध 1947-2017
DISHA
RUSSIAN-INDIAN FRIENDSHIP SOCIETY
РУССКО-ИНДИЙСКОЕ ОБЩЕСТВО ДРУЖБЫ
सितंबर, 2017 | 7 | मास्को, रूस | Moscow, Russia | त्रैमासिक हिंदी पत्रिका
With support of Jawaharlal Nehru Cultural Center, Embassy of India, Moscow
जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केन्द्र, भारतीय दूतावास, मास्को के सौजन्य से
При поддержке культурного центра им. Джавахарлала Неру, Посольство Индии в Москве

हिंदी का वर्तमान स्वरूप जिसे हम महसूस करते हैं :

सुशील कुमार आजाद, प्राध्यापक, एम्बेसी ऑफ इंडिया स्कूल, मॉस्को।

हिंदी भारतीय संविधान में राजभाषा के रूप में अंकित है। यह भारतीय जनमानस की आत्मा के रूप में है। यह समाज के बहुभाषी लोगों की प्रतिनिधि भाषा के रूप में निरंतर अग्रसर हो रही है। आज हिंदी अपने जिस रूप में है वह उसका नैसर्गिक एवं प्राकृतिक स्वरूप है जो बिना किसी राजाश्रयके निरंतर जनमानस के बीच से निकलती प्रतीत हो रही है। पिछले सैंकड़ों वर्षों तक हमारे देश की भाषाएँ हिंदीं, प्राकृत, संस्कृत, फारसी, उर्दू और अंग्रेजी रही | कारण ये रहा कि पूरा भारत अलग-अलग क्षेत्रोंमें बटा हुआ था और कई राजाओं या बादशाहओं के नियंत्रण में था और हर राज्य एक अलग 'देश' था इस कारण कभी उर्दू, कभी फारसी तो कभी संस्कृत भाषाओं का चलन रहा । उसके बाद अंग्रेजों की गुलामी का दो सौ साल लंबा दौर चला और अंग्रेजी को हम पर लाद दिया गया ।

अंग्रेजी का गुणगान करने वालों को शायद मालूम नहीं कि आज से केवल 800 वर्ष पूर्व, तेहरवीं शताब्दी तक विश्व में अंग्रेज़ी नाम की कोई भाषा नहीं थी । अंग्रेजी के जन्म से चार सौ वर्ष पूर्व हिन्दी भाषा ने अपने साहित्यिक इतिहास का सवर्णमय 'वीर-गाथा काल' समाप्त कर के 'भक्ति-काल' में प्रवेश कर लिया था । पृथ्वीराज-रसो, वीसलदेव-रासो, और पद्मावत आदि महाकाव्य लिखे जा चुके थे।

भारत कथा साहित्य का जनक देश है । भारत रचित कथायें आज विश्व के दूर दराज़ देशों की सभी भाषाओं और शैलियों में प्रचिलित हैं, लेकिन सुनने और पढने वालों को उन के मूल के बारे में कोई जानकारी नहीं है । पाश्चात्य साहित्यकारों को संस्कृत भाषा की औपचारिक जानकारी अठाहरवीं शताब्दी में मिली थी जिस के पश्चात उन को भारत की साहित्यक प्रतिभाओं का ज्ञान हुआ था । लेकिन साहित्य का हस्तान्तरण श्रुति के आधार पर इस से पूर्व ही हो चुका था । मतलब साफ है कि हिंदी बेहद प्राचीन और समृध्ध भाषा थी इस बात से नकारा नहीं जा सकता । रामायण, महाभारत तथा पौराणिक कथाओं के अतिरिक्त, भारत के लोक गायक नल-दमयन्ती, राजा भर्तरि, आल्हा -उदल आदि के प्रेम, विरह, और शौर्य की गाथायें जमाने से प्रचलित हैं जो इस बात की पूरक है कि हिंदी का अतीत बेहद गौरवशाली रहा है ।

भारतीय लेखक समाज सुधारक तो थे ही साथ ही साथ वे भाषाविद भी थे और आज भी हमारे लेखक उसी परम्परा पर चल रहै हैं । उन की लेखन शैली में नैतिकता की प्रधानता आदि-काल से रही है । भाषा और संस्कृति सिक्के के दो पहलू के समान है | यह सनातन सत्य हैं कि दुनिया के 43.7 करोड़ से ज्यादा लोग हिन्दी भाषा में बात करते हैं | हमारे देश की विविध भाषाएँ और विदेशी भाषा से भी हिन्दी में विपुल मात्रा में अनुवाद हुए हैं | मगर हमारी भाषाओं में से इसके मुकाबले बहुत कम अनुवाद

विदेशी भाषाओं में हुए हैं | इसी कारण हमारे पास संस्कृति-साहित्य का अटूट खज़ाना होने पर भी हम अपनी भाषाओं को विश्व के सामने उच्च स्तर और विपुल मात्र में नहीं रख पाये हैं ।

शायद इस के पीछे राजनितीज्ञों की नीति-अनीतियां तथा स्वार्थपूर्ण रवैया ही रहा होगा जिसके चलते जनमानस में दुविधा बढ़ती गई और राष्ट्रीय एकता समान हिंदी भाषा की माला के मोती बिखरते ही रहे....बिखरते ही रहे और हिंदीं अंग्रेजोंकी गुलामी तले दम तोडती रही |

गुलामी से तंग जनता ने स्वतंत्रता आंदोलन चलाया, बलिदान दिये और कई असफल प्रयासों के बाद अंततः स्वतंत्रता प्राप्त की और 14 सितंबर 1949 में संविधान में हिंदी राष्ट्रभाषाके रुप में चुनी गई । पर सिर्फ दर्जा मिल जाने से तो काम नहीं बनता...!! अंग्रेजीसे लिप्त लोगों को अपनी ही भाषा में काम करने में परेशानी आने लगी । सो अंग्रेजी को भी स्वीकृती दे दी गई, यहीं हमारे राजनेताओं से चुक हो गई...अगर तभी हिंदी को सरकारी कामकाज की भाषा के रुप में रख दिया जाता तो आज हमें हिंदी दिवस पर ये कहना नहीं पडता कि "

ज्यादा से ज्यादा काम हिंदीं में करो....।" किसी भी देश की अपनी एक अलग राष्ट्रभाषा होती, सरकारी कामकाज के लिये राजभाषा भी होती है | जिसके गौरव के बारे में हर एक आदमी सोचता हो, यही उस भाषा के अस्तित्व के बारे में प्रमाण सिद्ध करने का जरीया होता है | हम ऐसा करने में चूक गये..!!

ब्रिटिश कालीन शासन के यंत्रणा भरे दौर से स्वातंत्र्योपरांत हमें हिन्दी पत्रकारिताके फलने-फूलने का पर्याप्त अवसर मिला । पत्रकारिता का नया दौर शुरु हुआ । हिंदीं का प्रचार होना शुरु हुआ और फिल्म उद्योग ने उसे बढावा दिया जिस के द्वारा हिन्दी आज सभी प्रान्तों में घर की भाषा हो गई | हिन्दी के बलबूते पर ही फिल्म सिर्फ मनोरंजन का साधन मात्र न रहकर हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गई है!

आज भारत विश्वस्तर पर विकास की ऊंचाईयां सर कर रहा है । इसी कारण, अमरिका में कई सालों से हिन्दी के प्रति आदर-सम्मान देखा जाता रहा है | वहां की 27 से ज्यादा विश्वविद्यालयों में हिन्दी अभ्यास के लिए सुविधा रखी गई है | अपने देश को समृद्ध करने के लिए भी उन्हों ने हिन्दी और संस्कृत भाषा का बड़ी मात्रा में उपयोग करना शुरू किया हैं | 'वेबस्टर' की 'न्यू वर्ल्ड कोलेज डिक्शनरी' में भारतीय भाषा के शब्दों को शामिल करके 'हेल्लो', 'हाय' के बदले 'नमस्कार' शब्द चमकता हुआ दिखाई पड रहा है | 'हरिजन' शब्द के अर्थ में बताया गया हैं कि – "भारत में वह अछूत थे और बाद में अनुसूचित जातिओं में शामिल किये गए |" ये सब बातें क्या साबित कर रही हैं ? यही कि हिंदीं का भविष्य उज्जवल है | क्योंकि हम जानते हैं कि देश की उन्नति उसके विकास पर निर्भर है और जो भाषा ग्राहकों को आसानी से समझ में आयें वो ही सफलता दिला सकती है |चीन और जापान इस के जीते-जागते उदाहरण हैं | जिन देशों में अंग्रेजी का प्रभुत्व हैं ऐसे देशों से तो हम आयात कर ही रहे हैं और जिन देशों में हिन्दी का उपयोग हो रहा हैं उस में भी हमारे देश से उत्पाद की निकास हो रही है | मतलब साफ़ हैं कि हिन्दी के कारण ही हमारी विदेशी मुद्रा में बढ़ोतरी होती दिख रही है |

वर्तमानयुग सायबर युग है जिसमें कंप्यूटर का बोलबाला है | इस को समझकर ही आज हिंदी सोफ्ट्वेर की बाढ आ गई है | हिंदीं ब्लोग व हिंदीं वेब -साइट का चलन बढता जा रहा है | तकनीकी ने हिंदीं को आगे बढाने में अपना पूर्ण योगदान देना आरंभ कर दिया है

कविताएं

- डॉ मीनू शर्मा (हिन्दी अध्यापिका जवाहर लाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र भारतीय राजदूतावास मॉस्को)

'हिंदी'

हिंदी भाषा हमारी है,
हमें बहुत ये प्यारी है।
भावों की फुलवारी है,
हमें बहुत ये प्यारी है।

-1-
हिंदी का प्रसार यहाँ,
परिचय और सम्मान यहाँ।

हिंदी के विद्वान यहाँ,
देंगे हम को ज्ञान यहाँ।
सरस्वती ये हमारी है।
हमें बहुत ये प्यारी है।

-2-
जो हिंदी से प्यार करें,
हिंदी का सम्मान करें,
भागीरथ प्रयास करें
हिंदी का उत्थान करें।

हम उन के आभारी हैं।
हमें बहुत ये प्यारी है।

हिंदी भाषा हमारी है,
हमें बहुत ये प्यारी है।

-3-
शब्दों को देती जो जान,
कर देती पूरे अरमान।

है जो ईश्वर का वरदान,
हिन्दी हम सब का अभिमान।

दुनिया में ये निराली है।
हमें बहुत ये प्यारी है।

भावों की फुलवारी है,
हमें बहुत ये प्यारी हैं।

'जीवन'

जीवन एक लंबी डोर, जो दिखती है बहुत सुगढ़, बहुत चमकीली।
लेकिन अंदर न जाने कितने-कितने धागे उलझे हैं।

जीवन है घुंघरुओं की तरह जिन्हें बाँध कर हम हर दिन,
हर पल भांति-भांति के नृत्य करते हैं,
पर रुकने पर पाते हैं कि अंततः पाँव कितने दुखते हैं।

जीवन की कर्म यात्रा चलती है अनवरत- अंतहीन,
पर कुछ पड़ाव हैं हृदय में
जो आँखों के रास्ते पर हर पल सिसकते हैं।

जीवन की नदी बहा कर ले जाती है,
कभी इस घाट कभी उस डगर।
पर हर डगर पर अतीत के निशान हर पल,
हर क्षण कुछ कहते हैं।

जीवन गर्म रेत है तो एक छांव भी है ठंडी,
प्रेम के स्वर्ग से भी यहाँ सब गुजरते हैं।

॥ गंगा के तीर से वोल्गा के नीर तक : मेरा आत्मिक सफर ॥

कुमार विनायक, शिक्षक, एम्बेसी ऑफ इंडिया, मॉस्को।

जीवन एक यात्रा है इस यात्रा का संबंध जहाँ समाज के बाहरी परिवेश में भी महसूस करते ही है लेकिन एक ओर अंतस्थ यात्रा का अनुभव मानवीय स्मृतियों के बीच होकर गुजरती है जैसे कोई सरस सलील नदी अपना रास्ता स्वयं तय करती है। हाँ मुझे याद आया मैं भी उसी पतितपावनी गंगा नदी के तट का वासी हूँ जो एक नाविक की भांति निरंतर यादों की लहरों पर अपना सफर तय करता रहा हूँ। मेरा बचपन पतितपावनी माँ गंगा के तट पर राजघाट जो बनारस का एक ऐसा स्थान है जो न देखा जाने वाला, न सुना जाने वाला बल्कि जीया जाने वाला स्थान है। दरअसल बनारस कोई शहर नहीं है न था न होगा। शहर होता तो पेरिस और दिल्ली जैसा होता। बनारस सड़कों, दिवारों से नहीं बल्कि बनारसवासियों से है, उनके आचरण, विचरण एवं धारणा से है। बनारसीपन के बिना न तो कोई बाबा विश्वनाथ को देख सकता है न ही बनारस को। मुझे अभी भी याद है जब हम हर शाम घाट के किनारे खेलते थे, रूसी और विदेशी सैलानियों को देखकर मैं हमेशा उनसे हाथ मिलाने और बातें करने के लिए लालायित रहता था और कभी कभी गिटपिट भाषा में उनसे अंग्रेजी मे बातें भी कर लिया करता था। उस बचपन में मेरा मन विदेश जाने को उद्वेलित करता था। गंगा के इन्ही घाटों पर ही मेरा परिचय रूस से हो गया था जब चिड़ियों के झुंड को देखा जिन्हे एक मल्लाह आवाज देकर बुला रहा था और उसके हाथ में दाने थे जिन्हे वे चिड़िया आवाज सुनते ही चुगने के लिए आ धमकती थी। मैंने अपने बाबू जी से इन चिड़ियों के बारे में पूछा तो उन्होने बताया कि ये साइबेरियन चिड़ियां हैं जो बर्फिली ठंड से बचने के लिए रूस के आस-पास से उड़कर भारत की पवित्र गंगा का जलपान करनेआती हैं।

तब मुझे यह ज्ञात नही था कि समय के गर्भ में मेरे रुस आने की योजना अंकुरित हो रही है समय के झोखो के साथ साथ मेरे केंद्रीय विद्यालय में चयन और कुछ वर्षों पश्चात भारतीय दूतावास मोस्को के लिए मेरा चयन मेरे लिए एक सपने के सच होने जैसा था। चयन का परिणाम और मेरी तैनाती की तिथि में बहुत कम समय था जो सरकारी पासपोर्ट एवं वीजा की औपचारिकता में कब काफूर हो गया पता ही नहीं चला और आखिरकार 30 मार्च को वह घड़ी आ गई जब मेरी मॉस्को जाने के लिए उडान इंतजार कर रही थी। जहाज ने जैसे ही मेरे वतन की सरजमीं से अपने पाँव उपर उठा रहा था मुझे लगा कि मेरी कल्पना अपने पंखों की परवाज से हिलौरे ले रही है। मेरी यादों में बसा वही बाबा विश्वनाथ का बनारस, वही घाट, वही गंगा की लहरें, वही गंगा की आरती, वही आध्यात्मिक दर्शन सब कुछ मेरी यादों में उतरने लगा था। जैसे जैसे वायुयान आसमान की ओर बढ रहा था वैसे वैसे मै जमीन में धंस रहा था यादों की जमीन, सच मुझे याद आया वही लम्हा जब कभी रूसी नागरिकों से बतियाना और ख्यालों की पूंजी में इस हकीकत का सरेआम सच होना कितना स्वाभाविक लग रहा था। आसमान की अनंत नीलिमा में किसी शायर की तरह मुझे आसमान जमीन पर उतरता नजर आने लगा। क्या बाबा ने मेरे मन की बाल अवस्था को जानकर यह अवसर मुझे दिया है? मैं सोच ही रहा था।

सच तो यह है कि वास्तव में यह मेरा जन्म का पुनर्जन्म था। मुझे इस नई चुनौतियों और नए समाज की हकीकत से रूबरू होने का मखमली आभास होता जा रहा था। कुछ ही घंटों की हवाई यात्रा के बाद जैसे ही एयर इंडिया के जहाज ने मोस्को के डोमोडिडेवो एयरपोर्ट पर उतरा मन में ऐसा लगा जैसे एक नए लोक में मेरा पदार्पण हुआ हो। एयरपोर्ट से बाहर निकलते हुए पत्नी और बच्चों के साथ नीला सुहावना मौसम, ठंडी__हवाएं, आसमान की फीजाओं की रंगत सभी ने मानों मिलकर स्वागत सा किया हो। मैं और मेरी पत्नी, बच्चे सहमें हुए से इस रंगीन वातावरण की गुस्ताखियों को हैरत के साथ मन ही मन महसूस कर रहे थे। आसमान वही, हवाएं वही और चाँद भी वही था लेकिन यह भारत और रूस के दोस्ताना संबंधों की गर्माहट उन बर्फीली हवाओं से निकल कर हमारे शरीर के रोम रोम को आनंदित कर रहा था। मॉस्को एयरपोर्ट पर मेरी पहली मुलाकात डॉ श्रीहरि जो भारतीय दूतावास विद्यालय में सेवारत थे। वे हमें शहर के जाने माने होटल स्पूतनिक में ले आए जहाँ हम सब लगभग 12 दिन रहे। जहाँ साफ सुथरे कालीन बिछे कमरे, ठंडे मौसम में सुविधाजनक तापमान में सांस लेने का सुख तथा दरबार रेस्तरां में भारतीय व्यंजनों के साथ रूस के परंपरागत बैले नृत्य एक सुखद अनुभव था। एक अप्रैल 2017 का दिन मेरे भाग्योदय का पल था। मैं जिस स्कूल में अध्यापक के गौरवमय पद को सुशोभित कर रहा था दरअसल वह मेरा सपना था।

आज हम सब जब मॉस्को दर्शन के लिए निकले तो फिर मुझे मेरा बचपन, मेरी गंगा, मेरे घाट नए रूप में नजर आने लगे। बाबा विश्वनाथ की माया तो देखिए, मेरी आस्थाओं की जीत देखिए, नदी भी वही, केवल नाम अलग, जमीन भी वही केवल अहसास अलग, नाव भी वैसी ही लेकिन रूप अलग था। यह गंगा के तीर की वो यादें थी जो हकीकत में वोल्गा के पवित्र नीर को सहर्ष स्पर्श कर रही थी। गंगा के घाट चाहे दूर दूर तक बेतरतीब फैले हुए थे अब ये करीने से तराशे हुए थे, गंगा के घाट की वो नावें जो टूटे फट्टों और पानी के गलाव से कमजोर पालों को लिए हुए थी यहाँ अपने नवयौवन में क्रूज के रूप में थी। मैं हैरानी में था, आश्चार्य में हूँ कि यह जीवन यात्रा वास्तव में है क्या? गंगा के तीर से वोल्गा के नीर तक मेरा अहसास, मेरी श्रद्धा, मेरा विश्वास का यह सफर वास्तव में नदियों का सफर ही है। कितनी समानताएं हैं गंगा और वोल्गा में अंतर है तो केवल इतना कि दोनों ने रूप अलग अलग धारण किए है।

रूस में भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा की प्रहरी : दिशा

डॉ रामेश्वर सिहँ, अध्यक्ष, रूसी-भारतीय मैत्री संघ 'दिशा', +7 985 341 38 59, info@disha.su

यह कितना सही है कि जीवन का रहस्य कोई नहीं जान पाया मुझे शाब्दिक अर्थ तो न जाने कितनी बार सुनने को मिला लेकिन रूस की सरजमीं पर इसका साक्षात दर्शन मुझे हुए। भारत की माटी की खुशबू से दूर एक रुहानी संगत का असर जिसमें हिंदुस्तान धडकता है। यह है वो एक संस्था, जो अपने आप में एक समाज है ---रूसी-भारतीय समाज। जिसके सम्पर्क से मुझे एक पल के लिए भी महसूस नहीं हुआ कि मैं किसी अन्य देश की धरती पर हूं। मुझे यह संस्था अपने जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि लगी क्योंकि इसके सहारे ही हम सब रूसी-भारतीय संस्कृति और भाषाओं का सह-संबंध बनाने में सफल हुए थे। सही मायने में यही थी मेरे जीवन की चाह जिसमें वतन का पूरा अक्श उभरता है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य से समाज और समाज से साहित्य पोषित होता आया है। इसी उक्ति के आधार पर मुझे रूसी-भारतीय मैत्री संघ यानि □दिशा□ के संबंध में आपसे अपनी बात सांझा करनी है। अगर साहित्य की बात की जाए तो साहित्य वास्तव में समाज, राष्ट्र और विश्व को अपने आँचल में ऐसे छुपा लेता है जैसे एक माँ अपने शिशु को। यह 'छिपाना' ही वास्तव में अमरत्व की ओर एक कदम है। मैंने रूसी- भारतीय समाज की संचेतना को प्रगाढ और मुखर करने के लिए साहित्य के रामबाण का ही सहारा लिया जिसे आप सभी ने मुक्त कंठ से □दिशा□ नामक संज्ञा से विभूषित किया। सन 2010 के शरदकाल की वो ऐतिहासिक बेला जब रूसी और भारतीय समाज के मनीषियों ने एक मंच पर एकत्र होकर अपने वर्षों पूर्व दोस्ताना सम्बन्धों को नई इबारत में लिखने का उपक्रम किया। इस संघ के अस्तित्व में आने से वे सभी उद्देश्य स्वतः ही पूर्णता की ओर अग्रसर होते चले गए जिन्हे भारतीय जनमानस रूस के संदर्भ में महसूस करता था और रूसी नागरिक अपने मनोभावों के अनुरूप भारतीय सभ्यता और संस्कृति का सान्निध्य चाहते थे। अर्थ स्पष्ट है कि इस संघ का उद्देश्य दोनों राष्ट्रों के नागरिकों के बीच, वैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, दार्शनिक, व्यापारिक और नैतिक सांझेदारी को विश्व पटल पर स्थापित किया जाए।

इस संघ के वजूद में आने के उद्देश्य जिसमें साहित्यिक गतिविधियों, गोष्ठियों, मेलों, सम्मेलनों, चर्चाओं, महोत्सवों, खेल प्रतियोगिताओं, फिल्म महोत्सवों, वाद-विवाद आदि के आयोजन के साथ साथ एक त्रैमासिक पत्रिका 'दिशा' को भी प्रकाशित करता है। यह संघ रूसी-भारतीयों की मैत्री प्रगाढता को प्रकट करता है क्योंकि इसके अंतर्गत संघ रूसी -भारतीय समाज के सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों के साथ मिलकर अनेक कार्यक्रमों को संचालित करता है।

गत अनेक वर्षों से यह संगठन □दिशा□ रूस में प्रतिवर्ष 'नववर्ष महोत्सव' और 'भारतीय संस्कृति की संचेतना के कार्यक्रम' का आयोजन करता है जिसे दोनों देशों के लोग हर्षोल्लास से मानते हैं। इस समारोह में भारतीय और रूसी परिवारों के लोग, खासतौर पर जो दोनों देशों की सांझी विरासत के रूप में उदय हुए परिवार है इसमें बहुत मन से भाग लेते हैं। इस संगठन का वातावरण इतना आकर्षक है कि यह रूस में 'मिनी भारत' का अहसास देने में पूर्णतः सफल रहा है। आपके हरमन प्रिय इस संगठन के माध्यम से रूस स्थित परिवारों के बच्चे, बूढे और जवानों को भारतीयता की पहचान कराना भी महती उद्देश्यों में शामिल है। इस दिशा में सहयोगी के तौर पर जवाहर लाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय राजदूतावास, मॉस्को की भूमिका अति महत्त्वपूर्ण रहती है। इस आभार के भार से उऋण नहीं हुआ जा सकेगा। इस संस्थान से मिलकर आपकी 'दिशा' ने एक लघु प्रयास किया है जिसके अंतर्गत 'हिंदी मित्र सम्मान' कार्यक्रम शुरू किया। यह सम्मान प्रतिवर्ष एक ऐसे रूसी नागरिक को प्रदान किया जाता है जो किसी भी स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहा हो। गत वर्ष का 'हिंदी मित्र सम्मान-2015' मॉस्को विश्व विद्यालय की हिंदी की आचार्या श्रीमती (डॉ) ल्युदमीला खखलोवा को एवं इस वर्ष का 'हिंदी मित्र सम्मान-2016' येकतिरीना पानिना को एक भव्य समारोह में लाखों करतल ध्वनियों के बीच समर्पित किया गया। इस वर्ष से हम दो सम्मान देने का उपक्रम कर रहे हैं। यह सम्मान भारत में रूस के राजदूत रहे **श्री अलेक्जांद्र कदाकिन "हिंदी मित्र सम्मान"** एवं कवि, अनुवादक, समाजसेवी, दार्शनिक **पदम् श्री मदन लाल मधु "हिंदी सेवा सम्मान** के नाम से अब प्रतिवर्ष प्रदान किया जायेगा।

अध्यापन एवं सेवाभावी लोगों के साथ साथ हिंदी के विद्यार्थियों को भी प्रोत्साहित करने का हमारा उद्देश्य स्वतः उजागर हुआ है। गत वर्ष हिंदी भाषण एवं हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया जिसमें अनेक प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। विजेता छात्रों को पुरस्कृत भी किया गया। इसी परंपरा में गत वर्ष 19 मार्च 2016 को मॉस्को विश्वविद्यालय के अफ्रीकी एवं एशियन अध्ययन संस्थान में रूसी छात्रों के बीच 'हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता' का आयोजन हुआ जिसमें मॉस्को विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले राजकीय महाविद्यालयों के लगभग 33 छात्रों ने भाग लिया इस कार्यक्रम में पाँच छात्राओं को सम्मानित किया गया जो मॉस्को विश्वविद्यालय की थी। यह आयोजन अपने आप में एक रोमांच का रूप लिए हुए था। 27 मई 2016 का एक कार्यक्रम मुझे प्रत्यक्ष रूप में याद है जो भारत-रूस हिंदी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठि का आयोजन किया था जिसमें भारत से आए 21 कदावर हिंदी विद्वानों के साथ "भूमंडलीकरण में भारत और रूस का सांस्कृतिक योगदान" विषय के साथ साथ हिंदी की वर्तमान और भविष्य की अपार संभावनाओं के धरातल की खोज पर सार्थक चर्चा थी। हम सबको उम्मीद है कि यह हमारा प्रयास अपने समस्त उद्देश्यों में सफल होगा।

HINDUSTANI SAMAJ, MOSCOW - 60 YEARS

Hindustani Samaj is a non-political, non-commercial, socio-cultural and literary organization, which was founded in 1957 by those first Indian specialists who came to Moscow to work in the Foreign Languages Publishing House which (later renamed as Progress Publishers and Radio Moscow). Shri Radha Mohan Bhattacharya, an actor of Bengali films and a literary figure, was elected as the first President and well-known writer Shri Bhisham Sahni as General Secretary. Shri Ram Kumar Verma – a famous Hindi poet, play-wright and professor of Allahabad University headed the Samaj for some time. Since 1976, late Padmashree Dr. M. L. Madhu led the Samaj for about 30 years with a small break of about two years. Sh. Somasundaram and Mr. Habib-ul-Rehman, Prof. Dharam Rajan, Dr. Rothin Chatterjee and Sh. Yogender Nagpal guided the activities of the Samaj for some years. Other office-bearers of Hindustani Samaj, like Sh. Jaswant Singh Matharu, Sh. Karanjit Singh, Dr. Kashmir Singh, Sh. Anil Jain-(General Secretaries); Smt. Indrani Majumdar, Mr. Samar Shakeel, Dr. Rameshwar Singh - (vice-presidents); veteran senior members who did not hold any office, like Shri Ram Wadhwa, also made their great contribution to make Hindustani Samaj a strong and reputed organization.

At present Dr. Kashmir Singh is the president of Hindustani Samaj.

During all these long years, Hindustani Samaj has been trying its best to keep Indian socio-cultural traditions alive in a friendly country, observing all the important historical dates, celebrating festivals and thus bringing the Indian community closer and keeping in touch with the developments at home. It has gone through many ups-and downs but in spite of all that, today it remains a strong non-commercial organization of all Indians!

Hindustani Samaj has been regularly organizing cultural programmes, get-togethers and various competitions. Some of these programmes are mentioned below.

1. Padma Shree Madan Lal Madhu Anuvad Pratiyogita among Russian students learning Hindi, an annual event organized in March/April with prize distribution ceremony at the end of May, to commemorate Dr. Madhu's birthday on 25th May.

2. Hindustani Samaj has been holding Tagore Anniversary function regularly for many years. Its members take active part in the Tagore Anniversary cultural function which is organized by the JNCC in May.

3. Gala cultural programme "Unity in Diversity". Representatives of almost all Indian states take active part in this programme. In 2017 this programme will be organized on 29th October.

4. General knowledge test and quiz, as well as debate among students of Embassy of India School, Moscow. This function is devoted to the Bal Divas.

For Hindustani Samaj this year is a very special year, marking not only the 60th anniversary of its foundation but also the 70th anniversary of establishment of Diplomatic Relations between India and Russia. It has already been mentioned that during all these years, Hindustani Samaj has been striving to keep our community closer and united here, in Russia, with the blessings and cooperation of the Embassy of India. We hope to continue this tradition in the coming years with a more active participation of our old as well as new members.

हिन्दुस्तानी समाज की ओर से हिन्दी दिवस की शुभकामनाएँ!

डा. कश्मीर सिंह, अध्यक्ष हिन्दुस्तानी समाज, रूस

रूस में भारतीय समुदाय के सबसे पुराने संगठन 'हिन्दुस्तानी समाज' की ओर से हिन्दी दिवस के अवसर पर सभी हिन्दीप्रेमियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। रूस की राजधानी मास्को में हिन्दी दिवस का जश्न मनाने के लिए भारतीय दूतावास के अंतर्गत कार्यरत जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा 22 सितंबर को एक भव्य समारोह का आयोजन किया जा रहा है जिसकी सफलता के लिए हम हार्दिक कामना करते हैं।

इसी दिन रूसी-भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'दिशा' के नए अंक का विमोचन किया जाएगा। हम इस पत्रिका के मुख्य सम्पादक और प्रकाशक डा. रामेश्वर सिंह को हार्दिक बधाई और भविष्य में सफलता की शुभकामनाएँ देते हैं।

'हिन्दुस्तानी समाज' की गतिविधियों का मुख्य आयाम रूस में हिन्दी भाषा सहित भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देना है। इस लक्ष्य को पाने के लिए हम 'दिशा' रूस में स्थापित सभी भारतीय संगठनों के साथ सहयोग करने के लिए सदा तैयार हैं।

समाचारों में रूसी भारतीय समाज:

सुशील कुमार आजाद, प्राध्यापक, एम्बेसी ऑफ इंडिया स्कूल, मॉस्को।

॥ हर्षोल्लास से मनाया गया □समर बाजार□ महोत्सव ॥

भारतीय राजदूतावास में इस वर्ष भी बहुत हर्षोल्लास से □समर बाजार□ का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन महामहीम राजदूत महोदय श्री पंकज शरण जी के कर कमलों से हुआ। राजदूत महोद्य ने अपने वक्तव्य में बताया कि यह कार्यक्रम भारतीय राजदूतावास की ओर से होता है इसका उद्देश्य जहाँ ग्रीष्म का स्वागत करना है वहीं समस्त भारतीय और रूसी समुदाय का सामूहिक मिलन भी होता है। इस समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम रही। वहीं भारतीय स्टॉलस लगाई गई जिसमें भारतीय संस्कृति एवं रहन-सहन, खान-पान की व्यवस्था की गई थी। इसमें कई संस्थाओं ने अपने धार्मिक, व्यवसायिक दुकाने लगाकर लोगों को जागरूक किया। योग से संबंधित जानकारियाँ देते लोग आकर्षण का केंद्र थे। वास्तव में यह बहुत मनोहारी कार्यक्रम था।

॥ इंडिया डे में गूंजे कई संस्कृतियों के सुर ॥

किसी भी समाज में अपनी सभ्यता और संस्कृति की पहचान बनाने के लिए संघर्ष जरूरी होता है इस दिशा में भारतीय समाज एवं भारतीय सोच के लोगों ने गत दिवस भारतीय स्वतंत्रता दिवस को सम्मान देते हुए □इंडिया डे□ का आयोजन पार्क में किया गया। इस महा आयोजन में सैंकडों दुकाने लगाई गई जो भारतीय उत्पाद को प्रस्तुत कर रही थी। सभी रूसी, भारतीय एवं अन्य देशों के नागरिकों ने इस उत्सव का आनंद लिया। इसमें जहाँ सांस्कृतिक कार्यक्रम निरंतर दो दिन चलते हैं जिसकी धुन पर रूसी-भारतीय लोग बेथके थिरकते नजर आए। योग और आध्यात्म केंद्रों की अपनी पहचान बनी हुई थी। इस पार्क स्थल पर यत्र-तत्र भारतीयता के दर्शन हो रहे थे। इस समारोह के 5 लाख के लगभग लोग गवाह बने। इसके आयोजक श्री मनोज सामी कोतवानी जी थे।

॥ भारतीय स्वतंत्रता दिवस एक राष्ट्रीय पर्व है, इसका सम्मान राष्ट्र का सम्मान: महामहीम राजदूत महोदय ॥

15 अगस्त का पवित्र राष्ट्रीय महोत्सव भारतीय दूतावास के प्रांगण में बडी धूमधाम से मनाया गया। इस समारोह में भारतीय राजदूत महोद्य ने अपने कर-कमलों से झंडा लहराया, ध्वज प्रणाम किया, महामहिम राष्ट्रपति महोदय का अभिभाषण पढा गया। भारतीय सेनाओं के उपस्थित प्रतिनिधियों से सलामी ली। इस गौरवपूर्ण माहौल में देशभक्ति की महक आ रही थी। सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए। इस प्रकार आनंद एवं हर्ष के इस समारोह में दोपहर के सहभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

॥गणपति बप्पा मौरया जी...के समवेत सुरों से गूंज उठा मॉस्को॥

गत दिवस गणपति पूजा के दौरान मॉस्को में चारो तरफ गणपति जी की महापूजा अर्चना की धूम रही। शहर के ईस्कॉन टेम्पल के इलावा अन्य कई स्थानों पर गणपति जी के लिए पंडाल सजाए जाने की सूचना मिली है। आयोजको ने गणपति भक्तों को गणपति जी की भक्ति सागर में पुण्य की डुबकियाँ लगाने के लिए वॉलीवुड गायक श्री सुरेश वाडेकर को परिवार सहित न्यौता देकर एक भजन संध्या का आयोजन किया।

॥ देश की महान विरासत है: बिहार ॥

गत दिवस यहाँ मोस्को में ओवरसिज बिहार एसोसियेशन के द्वारा एक म्युजिकल कंसर्ट कराया गया जिसमें कई हजार लोगों ने शिरकत की। मुख्य अतिथि के तौर पर भारतीय राजदूतावास से डिप्टी चीफ ऑफ मिशन श्री जी. बालासुब्रह्मन्यम थे। इस मौके पर फिल्मी गायिका सोना महापात्रा ने सभी बोलियों के गीत गाकर श्रोताओं को नाचने के लिए विवश कर दिया। यह भी एक यादगार समारोह रहा।

॥ तमिल संघ के लोगों का नायाब जज्बा ॥

शहर मॉस्को में जहाँ हिंदुस्तानी समाज की गतिविधियाँ मुखर होती रहती हैं। वहीं भारत की अलग अलग सभ्यता और संस्कृति को बनाए रखने के लिए लगभग अलग अलग संघ या ऐसोशियेशन है इनमें एक है तमिल समाज का संघ। समाज में एकता एवं भारतीयता को जिंदा रखने हेतु गत दिवस एक होटल में भव्य कार्यक्रम रखा जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ साथ समाज में उत्तम कार्य करने वालों को सम्मानित भी किया गया।

॥ पंजाबी सभा ने कराया सभ्याचारक समागम ॥

शहर की पंजाबी सभा के अध्यक्ष एवं हिन्दुस्तानी समाज के प्रधान श्री कश्मीर सिहँ ने बताया कि गत दिवस हिंदुस्तानी समाज एवं पंजाबी सभा द्वारा रंगारंग कार्यक्रम कराया जिसमें पंजाबी सभ्याचार को दर्शाता एक भव्य कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए भारत से नामी गिरामी कलाकरों को बुलाया गया। इस कार्यक्रम में पद्मश्री मदन लाल मधु के नाम से संचालित अनुवाद प्रतियोगिता के विजेताओं को सार्वजनिक तौर पर सम्मानित भी किया गया। यह कार्यक्रम हिंदुस्तानी समाज का मुख्य कार्यक्रमों में शुमार है। समाज के जुझारु महसचिव श्री विशाल जी ने बताया कि निकट भविष्य में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जायेंगे।

॥कवि-सम्मेलन में रही हास्य की फुहार॥

हिंदुस्तानी समाज की ओर से ही एक भव्य कवि सम्मेलन कराया गया जिसमें श्री रमेश मुस्कान सहित कई भारतीय कवियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में भारत से आए कवियों ने भारतीयों सहित रूसी लोगों को भी हँसा हंसा कर लोट पोट कर दिया। इस समारोह में हजारों की संख्या में पहँचे श्रोताओं ने खुलकर हँसने और जीवन का आनंद लिया। यह एक यादगार कार्यक्रम रहा।

॥ राजनीतिक गतिविधयों से जुडा रहा रूसी-भारतीय समाज ॥

इस वर्ष 30 जून को भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का रूस दौरा सम्पन्न हुआ जिसमें दोनों देशो के बीच कई तरह के समझौते हुए। इस अवसर पर सेंटपीटर्सवर्ग में रूसी भारतीय संघ की पत्रिका □दिशा□ की एक प्रति डॉ. रामेश्वर जी द्वारा प्रधानमंत्री जी को भेंट की गई। लोकसभा अध्यक्षा श्रीमती सुमित्रा महाजन ने भी रूस की राजधानी मोस्को में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई उनके साथ लोकसभा सांसद एवं भारतीय सिनेमा अभिनेत्री श्रीमती हेमामालिनी ने भी रूसी समाज से भारतीय तालमेल की भूरी भूरी प्रशंसा की। सुमित्रा महाजन जी सहित हेमामालिनी जी व सभी ने दिशा की सराहना की।

रूसी और भारतीय साहित्य की समानता

डॉ अन्ना चेलनोकोवा, सेंट-पीटरस्बर्ग सरकारी विश्वविद्यालय

हिंदी और रूसी साहित्य और समाज

भारतीय संस्कृति की एक बहुत महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह अपनी प्राचीन प्रथाएँ कभी न भूलते हुए आगे चलने को तैयार है। भारतीय समाज और साहित्य का गहरा सम्बन्ध है और दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। मालूम होता है कि किसी भी संस्कृति का साहित्य इस संस्कृति के समाज का एक दर्पन होता है, इसलिए साहित्य मानव जीवन के उत्थान व चारित्रिक विकास में सदैव सहायक होता है। यह बिलकुल सही बात है कि जीवन और साहित्य का अटूट संबंध है। मानुष्य का पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा तथा जीवन निर्वहन भी समाज में साहित्य के असर पर होता है।

प्राचीन और आधुनिक भारतीय समाज और हिंदी साहित्य भी इस नियम के अपवाद नहीं हैं| प्राचीन समय से भारतीय समाज में हुई उथलपुथल को हिंदी आदिकालीन (सिद्ध, जैन तथा नाथ) और भक्तिकालीन (गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास, मीराबाई आदि) साहित्य ने व्यक्त किया है| विभिन ऐतिहासिक कारणों से (जातीय और भाषिक बहुरूपता, धार्मिक और दार्शनिक परम्पराएँ, अनेक विदेशी आक्रमण) भारतीय समाज अपने आप में वैश्विकता को समेटता हुआ बहुसांस्कृतिक समाज बन चुका है| हिंदी साहित्य में भारत की बहुसांस्कृतिकता स्पष्ट रूप से झलकती है| मानव सभ्यता के विकास में साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, साहित्य एवं समाज का संबंध युगों से देखा गया है। आर्य, शक, हुण, मुस्लिम, अंग्रेज़, पुर्तगाली आक्रमणों को सहने वाला भारत अपने हिंदी साहित्य में आर्य संस्कृति, मुस्लिम संस्कृति, अंग्रेजी सभ्यता, मार्क्सवादी चेतना आदि कई परिवर्तनों को समेटता है।

मानव की विचारधारा में परिवर्तन लाने का कार्य साहित्य द्वारा ही किया जाता है - आदिकालीन, भक्तिकालीन, रीतिकालीन साहित्य से लेकर समकालीन हिंदी साहित्य तक भारतीय समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक आदि आयामों का क्रमिक विकास देखा जा सकता है क्योंकि साहित्य का सृजन मानव पटल में ही होता है| किसी भी काल के साहित्य के अध्ययन से हम तत्कालीन मानव जीवन के रहन-सहन व अन्य गतिविधियों का सहज ही अध्ययन कर सकते हैं। दूसरी तरफ से साहित्य भी समाज के परिवर्तित स्वरूप के साथ बदलता रहता है जहाँ तक उन्नत साहित्य जीवन को वे नैतिक मूल्य प्रदान करते हैं जो उसे उत्थान की ओर ले जाते हैं।

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल विकास और परिवर्तन का युग माना जाता है, यहाँ तक कि स्वछंदतावाद और उत्तर स्वछंदतावाद युगों को साहित्यक क्रांति के युग कहते हैं| समकालीन हिंदी साहित्य और भारतीय समाज के सिलसिले के बारे में बहुत-सी मशहूर भारतीय विद्वान और साहित्यकार बीसवीं शताब्दी के शुरू से ही बोलते रहते हैं - उदाहरण के लिए आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी साहित्य को 'ज्ञानराशि का संचित कोश' मानते हैं, आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार साहित्य 'जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब' होता है और पंडित बाल कृष्ण भट्ट के अनुसार 'जन समूह के हृदय का विकास' होता है।

प्रथम तथा द्वीतीय विश्वयुद्ध, बर्लिन दीवार का पतन, भूमंडलीकरण से लेकर हाल ही में घटित ब्रेग्ज़ीट तक की घटनाएँ भारतीय समाज को प्रभावित करती हुई साहित्य में अंकित होती रही हैं, अभी भी हो रही हैं। भारतीय समाज और हिंदी समाज में एक साथ कई समाजों की उपस्थिति है। पूर्वोत्तर भारत का समाज, कश्मीर घाटी का समाज, दलित समाज, आदिवासी समाज आज कई मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। भारत में स्वाधीनता संग्राम, विभाजन की त्रासदी से लेकर बाबरी मस्जीद के ढहने तौर हाल ही में उदित स्वच्छ भारत अभियान तक कई बातें साहित्य को जलवायु दे रही हैं। आज के साहित्यकार वर्तमान भारत की समस्याओं को अपनी रचनाओं में पर्याप्त स्थान दे रहे हैं।

साहित्य और समाज का यह सिलसिला भारतीय राजनीतिज्ञों को अच्छी तरह मालूम है और इस कारण से वे हमेशा हिंदी भाषा की समस्या को बहुत ध्यान देते है| महात्मा गांधी के अनुसार 'भारत में हिंदी ही एकमात्र राजभाषा हो सकती है'; हिंदी, साहित्य और समाज की विषय पर इंदिरा गांधी की लिखी हुई एक सुन्दर कविता भी है:

हिंदी देश की एकता की ऐसी कड़ी है
जिसे मज़बूत करना प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य है।..

इतने बड़े देश में जहाँ इतनी भाषाएँ हैं, वहाँ देश की एकता के लिए आवश्यक है कि कोई भाषा ऐसी हो जिसे सब बोल सकें, जो एक कड़ी की तरह सबको मिला - जुला कर रख सके, इसलिए हिंदी को बढ़ाना हम सबका कर्त्तव्य है।

भाषा के बिना समाज और साहित्य की कल्पना नहीं की जा सकती है और साहित्य के बिना समाज की तरक्की संभव नहीं होती। भारतीय समाज व हिंदी साहित्य के इस ताने बाने में कई वैश्विक अवधारणायें, यथा – स्त्रीवाद,

दलित विमर्श, उत्तरआधुनिकता, उत्तर सत्यवाद भी अत्यंत प्रभावी रूप में दर्ज ह।| साहित्य के द्वारा समाज का निर्माण होता है और इस परिप्रेक्ष्य में भारतीय समाज और हिंदी साहित्य के भविष्यकालीन रूप पर भारतीय तथा विदेशी दृष्टिकोण से विचार किया जाना वर्तमान समय की आवश्यकता है।

रूसी साहित्य की अपनी ही दिशा है, अपना ही रास्ता, अपनी समस्याएँ भी होती हैं। फिर भी शुरू से (9 वीं शताब्दी की ऐतिहासिक और लोक कथाएँ) अभी तक रूसी साहित्य रूसी समाज का दर्पन होता रहा है। 20वीं शताब्दी में भारतीय लोगों का रूसी साहित्य से परिचय हुआ (अनुवादों में), और तब पुश्किन, तोलस्तोय, चेखोव आदि की रचनाएँ भारतीय पाठकों को बहुत ही पसंद आईं।

रूसी लेखकों ने अपनी कहानियों, नाटकों, कविताओं, उपन्यासों में रूसी समाज की विशेषताओं को चित्रित किया है। उनकी रचनाओं से भारतीय लोगों को अपने रूसी भाई-बहनों के जीवन के बारे में काफ़ी अच्छी जानकारी प्राप्त हो जा सकती है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि हिंदी साहित्य के विकास में रूसी साहित्य का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आधुनिक हिंदी साहित्य काफ़ी जवान है और – अफ़सोस की बात – रूस में अच्छी तरह अभी तक मालूम नहीं है। आशा है कि रूसी लोगों को हिंदी साहित्य के बारे में अधिक पता होगा और हम – रूसी भारतविद् – इसके लिए यथासंभव काम करने का वादा देने को तैयार हैं।

रूस तथा भारत में भाषाओं की समानता

दिमित्री बोबकोव, वरिष्ठ शिक्षक

अंतरराष्ट्रीय संबंधों, इतिहास और ओरिएंटल स्टडीज़ का संस्थान कज़ान संघीय विश्वविद्यालय के छात्र, टारार्स्टान राज्य, रूस

डैनियल मात्यूज़िन, 2 साल का

भाषाई समानताओं की सुविधाएँ (उदाहरण के उधार लेने के लिए संस्कृत-रूसी-टाटार)

हम जानते हैं कि संस्कृत के अध्ययन भारत और यूरोपीय सांस्कृतिक स्थिति की समझ के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह भाषा विशेष महत्व का है, और इस का मूल्य केवल वैज्ञानिक नहीं है। हमारी राय में, देखने का एक निश्चित बिंदु से कुछ हद तक, संस्कृत भाषाई इतिहास के रहस्यों की कुंजी है, साथ ही भारतीय संस्कृति की विचारों और छवियों का एक कंडक्टर है। यह सब हमें भरोसा दिलाता है कि दुनिया संस्कृति के इतिहास के अध्ययन मानव जाति के एक महान सांस्कृतिक भाषा के अध्ययन के बिना असंभव है।

भाषाई और सांस्कृतिक संचार के एक अध्ययन में हमारे लिए दिलचस्प हो गया है। उदाहरण के लिए, भारत और यूरोपीय भाषाओं में संस्कृत का एक तुलनात्मक अध्ययन भी शामिल है।

हम देखते हैं कि संस्कृत एक समृद्ध ऐतिहासिक, दार्शनिक और धार्मिक साहित्य की भाषा है। यह साहित्य भारत में केवल नहीं बल्कि विदेशों में भी बनाया। संस्कृत का विकास की प्रक्रिया एक सतत भाषा परिवर्तन है, और जब भारतीय व्याकरण इस को कृत्रिम रूप से स्थिर हो, यह लोकप्रिय भाषण में जारी है। इस प्रकार, यह बाद में कई आधुनिक भारत और यूरोपीय भाषाओं को प्रभावित किया जैसी हिंदी और रूसी। राजा, संस्कृत, बौद्ध धर्म, कर्म, निर्वाण, योग, गुरु, रुपया: वे सभी शब्द रूसी भाषा में संस्कृत से सीधे उधार के रूप में भारतीय जीवन और संस्कृति के विशिष्ट तत्वों की एक संख्या के पद पर नियुक्ति है।

मिसल के लिये, हमने संस्कृत-रूसी भाषा समानताएं का उदाहरण पाया है:

1	अग्नि	agon
2	अक्षन्	oko
3	अन्य	inoy
4	अस्मि	yesm
5	अस्ति	yest
6	अस्तित्व	yestestvo
7	भव	bytiye
8	भद्र	bodryi
9	भय	bayazn
10	भू	byt
11	भ्रातर्	brat
12	भ्रातृत्व	bratstvo
13	भ्रू	brov
14	आवर्त	povorot
15	वसन्त	vesna
16	वाचा	veshaniye
17	विधवा	vdova
18	गर्ज	groza, grom
19	दन्त	zub
20	दारव	derevannyi
21	द्वार्	dver

22	द्वितीय	vtoroy
23	जीवन	zhizn, zhivoy
24	ज्ञान	znaniye
25	दिन	den
26	दुरित	durnoy
27	लघु	lyogkiy
28	लिप्सक	lipkiy
29	लिह्	lizat
30	मांस	myaso
31	मातर्	mat
32	मृत	myortvyi
33	मारण, मृत्यु	smert
34	नभस	nebesa
35	नव	novyi
36	नक्त	noch
37	नामन्	imya
38	नीच	niskiy
39	ओष्ठ	usta
40	पद्	padat
41	पञ्चन्	pyat
42	प्लु	plavat
43	पर्याय, पर्यवपाद्य	perevorachivaniye, prevrasheniye
44	पथि	put
45	पच्	pech, varit
46	प्रबोधय्	probuditsya
47	प्रति	protiv
48	प्रश्न	voproshaniye
49	प्रिय	priyatnyi
50	पूर्ण	polnyi
51	फल	plod
52	सभा	sobraniye
53	सत्त्व	sut, istina
54	स्थामन्	stoyanka, mesto, stan, strana
55	स्था	stoyat, stat
56	शुष्क	sukhoy
57	सूनु	syn
58	तनु	tonkiy
59	त्व	tvoy, tebe
60	तृतीय	tretiy
61	द्व	dva
62	त्रि	tri
63	उभ	oba
64	ह्वा	zvat
65	हिम	zima
66	हृद्	serdtse, grud
67	चत्वारः	chetvero
68	चतुर्थ	chetvyortyi
69	श्वेत	svetlyi, belyi
70	युवक	yunyi

हमने यह भी देखा है कि प्राचीन संपर्क के बारे में तातार भाषा के भाषाई तथ्य व्युत्पाद्य हैं। भारतीय शब्द «आर्य» टाटार «अरु» के रूप में है, मतलब स्वच्छ; «योग» – «जिगु» – लादना, अपनी इच्छा को रोकना; «तमाशा» – थिएटर; «बीस्टी» – गरीबों के लिए बस्ती।

वर्तमान में, आप केवल अनुमान लगा सकते हैं कि कितने क़ज़ान, बूल्गरी और तुर्क मूल के शब्द भारतीयों के व्यवहार में आ गए हैं।

हम मानते हैं कि भाषाविदों का संस्कृत के अध्ययन में समृद्ध अनुभव संचित है। अब उसका विकास और वितरण की समस्या को हल करने की जरूरत है। हाल के वर्षों में, लोग संस्कृत में रुचि के तथ्य पहचानते हैं, उदाहरण के लिए, भारत और यूरोपीय भाषाओं में संस्कृत का तुलनात्मक अध्ययन।

हमारी राय में, उधार की समस्याओं के अध्ययन, संस्कृत सहित, अब तीव्र और लोकप्रिय है। संस्कृत के अध्ययन मिलनसार उद्देश्य इरादा नहीं है। हालांकि, यह हमारे लोगों के मेल-मिलाप के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

अंत में, हम ध्यान दें कि यह जानकारी विशेषज्ञों विद्वान पेशेवरों के लिए न केवल ब्याज की है, लेकिन यह भी पार सांस्कृतिक संचार के लिए है। संस्कृत भारत और यूरोपीय सांस्कृतिक स्थिति के अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारे लिए, सब से पहले, संस्कृत रूसी और टाटार भाषाओं की समानता का अध्ययन करना दिलचस्प है।

धार्मिक मर्यादा और गांधी जी

डॉ सुधीर कुमार, शिक्षक, केन्द्रीय विद्यालय, फ़रीदाबाद नंबर - 3, हरियाणा (भारत)

गाँधी जी एक सच्चे धार्मिक व्यक्ति थे। उनका कहना था कि मैं एक सच्चा हिन्दू हूँ क्योंकि मैं एक सच्चा मुसलमान, सिक्ख और ईसाई भी हूँ, उनका स्पष्ट मत था कि जो व्यक्ति धार्मिक होगा , वह स्वाभाविक रूप से सभी धर्मो को समान रूप से आदर करेगा, क्योकि धार्मिक होना मानव स्वभाव का एक अहम हिस्सा है, और धर्म के मार्ग पर चलकर मनुष्य सत्य और असत्य के भेद को समझकर सामाजिक जीवन कि कल्पना करता है, व्याहरिक जीवन मे सफल हो पता है, सामान्य तौर पर मनुष्य धर्म को मात्र ईश्वर प्राप्ति का साधन मानते हैं, जबकि धर्म जीवन जीने कि कला है, जहां धर्म है, वही जय है।

गांधी जी कहा करते थे, सत्य ही ईश्वर, अर्थात जो सत्य अहिंसा और प्रेम व करुणा मे परस्पर समंजस्य रखता है, वह दैविक शक्ति को प्राप्त करता है, सत्य से परे ईश्वर कि कल्पना नहीं कि जा सकती है, वास्तव में ईश्वर में आस्था रखने वाले सभी किसी से वामनस्य या दुर्भावना नहीं रखते हैं, वह परस्पर यथार्थ परक जीवन में विश्वास करते हैं। एक स्वस्थ परंपरा में जीने वाला व्यक्ति कभी किसी प्रकार कि दुर्भावना का शिकार हो ही नहीं सकता, उसे सब कुछ समान दिखता है, कोई धर्म छोटा या बड़ा होने कि कल्पना से परे होकर समानता कि बात सोचते हैं।

गांधी जी मत था कि हम अपने घर मे सभी खिड़कीयों को खोल कर रखते हैं इसलिए कि सभी दिशाओं से हवा का आदान प्रदान हो उसी तरह अपने वैचारिक दृष्टिकोण् की खिड़कीयों को खुला रखना चाहिए ताकि हमे परस्पर सभी धर्मों की अच्छाईयों का ज्ञान हो सके, अगर हम दरवाजे बंद कर लेते हैं तो बाहरी ज्ञान से विमुख हो जाएंगे अर्थात हमारा आंतरिक मन अधूरा हो जाएगा, और अतिवाद का शिकार हो जाएगा क्योंकि हमारी अच्छाइयाँ ही हमारी पहचान होती हैं, धार्मिक पहचान से व्यक्ति बड़ा या छोटा नहीं हो सकता, व्यक्ति की पहचान उनके गुण और कार्यशैली से सिद्ध होती है, चाहे वह किसी भी धर्म या समुदाय का हो, यह सर्वविदित है कि धर्म के कई रूप हैं, सभी धर्मों की अपनी अपनी मान्यताएँ हैं, हिन्दू धर्म मानवता, आपसी भाईचारा और समस्त जीवों के प्रति प्रेम कि बात सिखाती है, तो दूसरी तरफ इस्लाम धर्म परस्पर सहयोग और भाई चारा का संदेश देती है, सिक्ख धर्म सभी से प्रेम और शांति का संदेश देती है, जैन धर्म त्याग और बलिदान की शिक्षा देती हैं, अर्थात समस्त धर्मों की मान्यता एक ही है, जिसका एकमात्र उदेश्य सभी जीवों के प्रति मैत्री भाव, प्राणियों से मित्रता जो दुख मे है, उसके प्रति दया भाव तथा जो विनोद मेन उसके प्रति तटस्थ भाव, यानि असल धार्मिक मान्यताएँ यही हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे धार्मिक मर्यादाओं का अवमूल्यन हो गया है। सभी धर्मों के धार्मिक प्रतिनिधियों द्वारा अपने – अपने व्यक्तिगत स्वार्थ साधने हेतु धार्मिक मान्यतों को समाज पर थोपना चाहते हैं, एवं वैचारिक दृष्टिकोण् से धार्मिक विचार की संस्कृति को बदलना चाहते, जिससे सामाजिक क्लेश और अशांति का वातावरण बनता है, जो पूर्णत समय और सकाल के लिए उपयुक नहीं है अक्सर ऐसे ही धार्मिक ठेकेदार यह बताने का प्रयास करते हैं कि हमारा ही धर्म श्रेस्ठ है, ताकि सब मित्था अर्थात इन्ही भावनाओं के कारण समाज में वैमनस्य और आपसी दूरियाँ बढ़ती हैं, जहां आपस में प्रेम के बजाय अशांति और आविश्वास का माहौल तैयार हो जाता है।

गुरु और शिक्षा

कवि : जगवीर सिहँ कादयान, शिक्षक, केंद्रीय विद्यालय भारतीय, राजदूतावास,मॉस्को (रूस)

जन्म लेने से पूर्व,
शायद यमराज की सभा में,
चित्रगुप्त कह उठा होगा,
महाराज .....आत्मा पवित्र है |
मैं झूम उठा हूंगा |
अमरता मिलेगी...मिलेगी योनी शायद बेहतर,
जन्म के साथ मिली बौद्धिकता ने
अहसास कराया कि,
मैं हूँ गुरु,

मैं हूँ आचार्य,
मैं हूँ शिक्षक,
मैं हूँ अध्यापक ...धरा का |
मगर संसार के प्राकृतिक फेर में,
बस मैं फंसा कि फँसता चला गया |
शिष्या बनी मेरी आत्मा के संसर्ग में,
मेरा पाटन मेरी उन्नति का पर्याय बना,

मैंने बेच दिए ज्ञान के हीरे,
माया के चंद टुकड़ों के लिए,
मैं ढूँढता रहा अपना वजूद,
अपने मन दर्पण में,
नहीं खोज पाया यमराज कि सोच |
मेरे पवित्र कर्मों का पल प्रतिफल बोध,
क्यूँ खोता जा रहा है सरेआम,
अर्थशास्त्र की व्याख्याएं,
नित हो रही हैं मौखिक अर्थों में,

साठये महाविद्यालय मुंबई का एक प्रतिष्ठित महाविद्यालय है, इस महाविद्यालय में हिन्दी विभाग, एवं **इन्दिरा गांधी जनजातीय युनिवर्सिटी, अमरकंटक एवं अयोध्या शोध संस्थान**, अयोध्या के संयुक्त तत्वावधन में 28-29 सितम्बर 2017 को अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी "रामकथा और आदिवासी" विषय पर होने जा रही है। **साहित्यिक संस्कृतिक शोध संस्था** एवं **रूसी-भारतीय मैत्री संघ 'दिशा'** के संयुक्त तत्वावधन में दस विद्वानों को जो हिन्दी के प्रति समर्पित है। उन्हें साठये महाविद्यालय में दिनांक 28-09-2017 को **अंतर्राष्ट्रीय "हिन्दी मित्र सम्मान"** से नवाजा जाएगा। जिसके नाम इस प्रकार है (1) डॉ. टी.वी. कट्टीमनी, अमरकंटक (2) डॉ. एस पी गौतम, भोपाल (3) डॉ. कविता रेगे, मुंबई (4) डॉ. योगेश दुबे, मुंबई (5) डॉ. अनिल सिंह, मुंबई (6) डॉ. यंतुदेव बुधु, मॉरीशस (7) डॉ. विनय कुमार. गया (8) डॉ. अशोक फर्डे, मुंबई (9) डॉ. सुरेन्द्र बिहारी, गया (10) श्री. योगेन्द्र प्रताप सिंह, लखनऊ।

रूसी-भारतीय संघ द्वारा सम्मानित होने वाले हिंदी सेवियों का परिचय ।

डॉ रामेश्वर सिहँ, अध्यक्ष, रूसी-भारतीय मैत्री संघ 'दिशा',

अलेक्जांद्र कदाकिन "हिंदी मित्र सम्मान"

डॉ. इंदिरा गाजिएबा :

मॉस्को में ही नहीं बल्कि पूरे रूस एवं कई देशों में डॉ. इंदिरा गाजिएबा का नाम हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकारों एवं शिक्षकों में बहुत मान सम्मान के साथ लिया जाता है।

आपका जन्म उजबेकिस्तान के ताशकंद शहर में हुआ।

आप जब बचपन में पिता जी के साथ भारत के महाराष्ट्र के पोवाई नगर में आई तभी हिंदी और हिंदुस्तान की संस्कृति से आपका घनिष्ठ नाता जुड गया था।

आपने ताशकंद विश्वविद्यालय के पूर्वी विभाग से अपना अध्यापन कार्य आरंभ किया।

भाषा विज्ञान और व्याकरण के प्रति आपकी लग्न ने हिंदी के साथ गहरी आत्मियता प्रदान की।

आप संस्कृत सीखने और पीएचडी करने के इरादे से मॉस्को युनिवर्सिटी में आई और फिर यही पर प्राध्यापकीय कर्म में संलग्न हो गई।

सन 1994 से 2000 तक आपने मॉस्को युनिवर्सिटी के एशिया अफ्रीका संस्थान में हिंदी अध्यापन कार्य किया।

आजकल आप सन 2000 से ही रूसी राजकीय मानविकी विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा एवं व्याकरण को बहुत चाव से पढा रही हैं। इस दौरान आपकी अनेकों पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

आज हिंदी दिवस के पावन मौके पर रूसी-भारतीय मैत्री संघ की ओर से आपको अलेक्जांद्र कदाकिन "हिंदी मित्र सम्मान-2017" प्रदान करते हुए हम सब अपने आप को गौरवांवित महसूस करते हैं।

पदम् श्री मदन लाल मधु "हिंदी सेवा सम्मान"

दिमित्री बाब्कॉव :

श्री दिमित्री बोब्कॉव युवा हिंदी अध्यापक हैं जिनके व्यक्तित्व में हिंदी के प्रति सहज आकर्षण एवं सेवा भाव कूट कूट कर भरा है श्री दिमित्री जी का जन्म सन 1975 में हुआ।

कजान की पीडागोगिकल युनिवर्सिटी में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। आपको प्रारम्भ से ही विदेशी भाषाओं के प्रति लगाव था।

सन 1993 से 1998 तक कजान विश्वविद्यालय से ही अंग्रेजी, हिंदी अध्ययन किया। आज तातरतान में एक मात्र हिंदी अनुवादक का गौरवपूर्ण कार्य कर रहे हैं।

आप सन 2015 से निरंतर भाषाओं के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर शोध कार्य करने में संलग्न हैं।

आपने हिंदी के विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक सराहनीय कार्य किए हैं जो आज भी आप कजान युनिवर्सिटी में अध्यापन करने के साथ साथ बाखूबी कर रहे हो।

आज हिंदी दिवस के मौके पर भारतीय राजदूतावास में रूसी भारतीय संघ की ओर से पदम् श्री मदन लाल मधु "हिंदी सेवा सम्मान-2017" प्रदान करते हुए हम सब आनंदित महसूस करते हैं।

हमारे प्रायोजक

КОРАЛ-МЕД CORAL-MED

RUSEURO PHARM

ugeя idea a 2 z services

रूसी-भारतीय मैत्री पर हमें गर्व है

ГОРИЗОНТ

दिशा ГОРИЗОНТ

रूसी भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' द्वारा
जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केन्द्र,
भारतीय दूतावास, मास्को के सौजन्य
से प्रकाशित और प्रसारित
मुख्य सम्पादक और प्रकाशक डॉ. रामेश्वर सिंह

संपादक : सुशील कुमार आजाद, प्राध्यापक,
एम्बेसी ऑफ इंडिया स्कूल, मॉस्को
तकनीकी सम्पादक: नादेज़्दा सिंह, दिनीस

सहयोगी :
ल्युदमीला ख़ख़लोवा, इन्दिरा गज़िएवा,
गुज़ेल स्त्रिल्कोवा, डॉ. मीनू शर्मा, कुमार
विनायक, येकतिरीना पानिना,
अनस्तसीया गूरिया, अल्पना दास,
रति कोसिनवा

संचालन एवं सम्पादन पूर्णतया
अव्यावसायिक व अवैतनिक

कार्यालय : info@disha.su, www.disha.su
FB: DISHA(INDO-RUSSIAN friendship society)
VK: http://vk.com/nco_disha
सम्पर्क दूरभाष : +7 985 341 38 59
लेखों में व्यक्त विचारों से सम्पादक की
सहमति ज़रूरी नहीं

निःशुल्क वितरण के लिए

Отпечатано в ООО «ИДЕЯ»
+7 926 222 0 888
www.ideaonline.ru